❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त आर्यजगत को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की हार्दिक शुभकामनाएं

वर्ष 44, अंक 41 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 23 अगस्त, 2021 से रविवार 29 अगस्त, 2021
विक्रमी सम्वत् 2078 सृष्टि सम्वत् 1960853122
दयानन्दाब्द : 198 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

पूर्वोत्तर राज्य सिक्किम में बनेगा आर्यसमाज का सेवा केन्द्र

सार्वदेशिक सभा की ईकाई अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ को सरकार द्वारा प्राप्त हुई भूमि

मानव सेवा और राष्ट्र निर्माण के लिए समर्पित आर्य समाज नित निरन्तर अपने रचनात्मक सेवाकार्यों को गति प्रदान कर रहा है। 16 अगस्त 2021 को सिक्किम के महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद जी और माननीय मुख्यमंत्री श्री प्रेम सिंह तमांग जी ने गंगटोक में बैठक कर यह सुनिश्चित किया कि सिक्किम सरकार द्वारा राष्ट्र निर्माण हेतु छात्रों के उज्ज्वल भविष्य एवं शैक्षणिक विकास के लिए गंगटोक के सोनम तेन सिंह मार्ग पर 0.51 एकड़ भूमि अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ को प्रदान की जाए। माननीय मुख्यमंत्री जी ने अखिल भारतीय दयानन्द सेवा श्रम संघ को संस्था के निर्माण कार्य के लिए एक करोड़ रुपये की मदद की भी घोषणा की और साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि आवश्यकता पड़ने पर संस्था को और अधिक मदद दी जाएगी। वर्तमान में भूमि के पंजीकरण की प्रक्रिया जारी है।

ज्ञात हो कि 14 मार्च 2020 को

दयानन्द सेवाश्रम संघ सेवा कार्यों का करेगा और विस्तार
- सुरेन्द्र कुमार आर्य, प्रधान, अ. भा. द. से. सं

महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद, मुख्यमंत्री श्री प्रेम सिंह तमांग, आर्य समाज का शीर्ष नेतृत्व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि की उपस्थिति में यज्ञ, ध्वजारोहण और गोष्ठी करके सिक्किम में आर्य समाज द्वारा सेवा का प्रकल्प संचालित करने का

महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद जी एवं मुख्यमन्त्री श्री प्रेमसिंह तमांग के साथ अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के उप प्रधान श्री विनय आर्य जी तथा श्री विपिन भल्ला जी

सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, स्व. महाशय धर्मपाल जी, श्री प्रकाश आर्य जी, श्री विनय आर्य जी, श्री जोगिंदर खट्टर जी इत्यादि महानुभावों संकल्प किया था। अब वह कल्याणकारी संकल्प साकार करने के लिए आर्य समाज अग्रसर है। इस महान उपलब्धि के लिए सभी आर्यजनों को बधाई देते हुए अखिल भारतीय दयानन्द सेवा श्रम संघ के प्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी ने कहा कि आर्यसमाज उन समस्त आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा क्रान्ति का अभियान चला रहा है, जहां 21वीं सदी की ओर बढ़ते हुए भारत में आज भी अनेक बच्चे शिक्षा से वंचित रह जाते हैं, और वे बच्चे समाज की मुख्य धारा से कटकर अपराधी तक बन जाते हैं। राष्ट्र निर्माण के लिए उन बच्चों को शिक्षा और संस्कार देकर भारत के सभ्य नागरिक बनाने का जो कार्य आर्यसमाज कर रहा है, उसे और अधिक गति प्रदान करना हमारा मुख्य उद्देश्य है। सिक्किम में प्राप्त इस भूमि पर जो शिक्षा सेवा केन्द्र संचालित होगा, वह आने वाले समय में उन तमाम बच्चों के लिए एक वरदान सिद्ध होगा, जो किसी भी कारण से शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ थे, उन्हें वैदिक धर्म, संस्कृति एवं संस्कारों का ज्ञान भी दिया जाएगा। मैं माननीय राज्यपाल माहोदय श्री गंगा प्रसाद जी एवं सिक्किम सरकार का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं।

लेह, लद्दाख और कारगिल में आर्यसमाज की स्थापना के प्रयास

लद्दाख के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी से मिला आर्यसमाज का प्रतिनिधि मंडल

अछूते क्षेत्रों में बढ़ेगा आर्य समाज का प्रचार कार्य - सुरेश चंद्र आर्य

नए स्थानों पर आर्य संस्थाओं की स्थापना से आर्य समाज होगा मजबूत- प्रकाश आर्य

आर्य समाज के प्रचार, प्रसार और विस्तार हेतु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी, गुरुकुल कांगड़ी के कुलाधिपति एवं बागपत लोकसभा के यशस्वी सांसद श्री सत्यपाल सिंह जी तथा सभा के मंत्री श्री कृपाल सिंह जी ने पिछले दिनों लद्दाख क्षेत्र में आर्य समाज की स्थापना तथा प्रचार प्रसार को लक्ष्य में रखकर वहां की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान आपने लेह लद्दाख में रहने वाले आर्य समाज परिवारों, आर्य प्रतिष्ठानों की खोज की और वहां के महानुभावों के साथ गोष्ठी कर आर्य समाज के उत्थान के लिए उन्हें प्रेरित किया, आर्य समाज के लिए सम्भावित भूमि की भी खोज की। इस अवसर पर लद्दाख ऑटोनोमस हिल्स डवलपमेंट कौंसिल के चेयरमैन एवं मुख्य प्रशासनिक अधिकारी श्री तासी ग्याल्सन जी से भेंटकर आर्य समाज के सिद्धांत, मान्यताओं और परम्पराओं को लेकर जब चर्चा की तो वे इतने प्रभावित हुए की उन्होंने कहा कि लद्दाख में तो आर्य समाज बनना ही चाहिए लेकिन कारगिल में भी आर्य समाज की स्थापना होनी चाहिए। श्री तासी जी ने लेह, लद्दाख और कारगिल में आर्यसमाज की स्थापना और प्रचार-प्रसार में सहयोग देने का संकल्प किया। श्री तासी जी ने डॉ सत्यपाल सिंह जी, श्री विनय आर्य जी और श्री कृपाल सिंह जी का लद्दाख पधारने पर हृदय से धन्यवाद किया।

वैदिक धर्म के मूल को समेटे हुए है लेह लद्दाख का क्षेत्र - डॉ. सत्यपाल सिंह

लेह में शीघ्र ही फहरेगा ओ३म् ध्वज - धर्मपाल आर्य

लद्दाख के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी श्री तासी ग्याल्सन जी से भेंट करते श्री विनय आर्य जी एवं श्रीकृपाल सिंह जी। लेह-लद्दाख में भ्रमण एवं आर्यसमाज स्थापना की सम्भावना तलाशते आर्य नेता एवं सांसद डॉ. सत्यपाल सिंह जी एवं के साथ श्री विनय आर्य जी एवं श्रीकृपाल सिंह जी। आर्य संस्कृति के पुराने अवशेष यहां-वहां मिल जाते हैं, यहां आर्यन वैली भी है जहां के निवासियों को संसार की पहली जन्मना जाति माना जाता है। ऐसे ही एक बौद्ध संस्थान जिसके नाम के आगे आर्य लिखा है, के साथ चित्र लेते विनय आर्य जी और कृपाल सिंह आर्य जी।

देववाणी-संस्कृत

आत्मा का सिंहनाद

वेद-स्वाध्याय

अहमिन्द्रो न परा जिग्य इद् धनं न मृत्यवेऽव तस्थे कदा चन।
सोममिन्मा सुन्वन्तो याचता वसु न मे पूरवः सख्ये रिषाथन।। -ऋ. 10/48/5
ऋषिः इन्द्रो वैकुण्ठः।। देवता - इन्द्रः।। छन्दः विराड्जगती।।

शब्दार्थ - अहं इन्द्रः= मैं आत्मा हूं **धनं न पराजिग्ये इत्**= मैं ऐश्वर्य को कभी हार नहीं सकता। **मृत्यवे न कदाचन अवतस्थे**= मृत्यु कभी भी मुझे नहीं आ सकती। **हे पूरवः**= हे मनुष्यो! **सोमं सुन्वन्तः इत् मा वसु याचत**= यज्ञार्थ कर्म करते हुए ही मुझसे ऐश्वर्यों को मांगो। **मे सख्ये न रिषाथन**= मेरी मैत्री (सख्य) में रहते हुए तुम कभी नष्ट नहीं होओगे।

विनय - मैं इन्द्र आत्मा हूं। मैं कभी भी हराया नहीं जा सकता। मेरा ऐश्वर्य कभी भी छीना नहीं जा सकता। प्रकृति के साथ मेरी लड़ाई ठनी है। प्रकृति मेरे ऐश्वर्य छीनना चाहती है, परन्तु मैं प्रकृति के साथ लड़ी गई अपनी प्रत्येक लड़ाई में विजयी होता हूं और जितना-जितना विजयी होता जाता हूं उतना-उतना मुझमें मेरा नया-नया ऐश्वर्य प्रकट होता जाता है। मैं कभी भी प्रकृति से हार नहीं खा सकता। ऐसा क्यों न हो? मैं तो मौत को भी खा जाने वाला हूं। सब संसार को खानेवाली मौत भी मेरे सामने नहीं ठहर सकती। मैं अमर आत्मा हूं। मृत्यु से बढ़कर और किस हथियार से प्रकृति मुझे जीतेगी? हे मनुष्यो! तुम मेरे पास खड़े होकर देखो और बोलो-''मैं अमर हूं! मैं अमर हूं!'' तुम कहां प्रकृति की मोहिनी मूर्ति के सामने ऐश्वर्यों के लिए गिड़गिड़ाते फिरते हो? यह माया तुम्हें धोखा ही दे सकती है, ऐश्वर्य नहीं दे सकती। इससे जो कुछ ऐश्वर्य मिलते तुम्हें दीखते हैं वे सब वास्तव में मेरी शक्ति से ही मिलते हैं। इसलिए आओ, मनुष्यो! तुम मुझसे ऐश्वर्य मांगो। मैं तुम्हें सब-कुछ दूंगा, परन्तु एक शर्त है। सोम का सवन करते हुए-यज्ञार्थ कर्म करते हुए ही तुम मुझसे ऐश्वर्य मांगो। संसार में सच्चा सोम का रस आत्म-ज्ञान ही है- सच्चा ज्ञान, भक्तिभरा आत्मज्ञान ही है। इस ज्ञान के निष्पादन करने में सहायक तुम्हारे जितने कर्म हैं वे सब सोम-सवन ही हैं। ये यज्ञार्थ कर्म हैं। ये यज्ञ-कर्म तुम्हें अमर बनाते हैं, तुम्हें मुझ आत्मा के पास लाते हैं, ये 'आत्म' 'विशुद्धये' होते हैं, अतः खूब यत्न = उद्योग के साथ इस सोम का सवन करते हुए तुम मुझसे जो कुछ मांगोगे वह मैं तुम्हें अवश्य दूंगा। अरे! तुम्हें एक के बाद एक अनमोल ऐश्वर्य मिलता जाएगा। तुम कहां इस माया के पीछे पड़े हुए ठीकरियां बटोर रहे हो? मुझसे तुम अन्दर का खज़ाना क्यों नहीं मांगते? हे मनुष्यो! तुम मुझ आत्मा से मैत्री करो तो तुम विनाश से पार हो जाओगे। इन प्रकृति के गुणों से बहुत दिन दोस्ती कर ली। मुझ से मैत्री करके देखो! यह दावा है कि मेरे मित्र का इस संसार में कोई नाश नहीं कर सकता।

हे नर-तन पानेवालो, सुनो! तुम्हारे ही आत्मा का यह सिंहनाद है। तुम्हारा आत्मा गरज रहा है, सुनो! **सन्दर्भ : 1. गीता 5/11**

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

काबुल में तालिबान अब आगे क्या होगा?

.....आज जो तालिबान ने किया ऐसा तो कम्युनिस्ट 100 सालों करते आये हैं। वामपंथियों ने क्यूबा पर सेम इसी तकनीक से हमला किया था। रूस में जार को हटाना हो या चीनी क्रांति ये ही तो वर्जन था जिसे आज तालिबान ने लागू किया। कम्युनिस्ट तो स्वयं मे एक आतंकी फासिस्ट विचारधारा है मुस्लिम आतंकवाद के साथ है। यही कम्युनिस्ट सारी दुनिया मे भेष बदल कर लिबरल के रूप मे घुसे हुए हैं। इन कम्यूनिष्टों का इस्लामिक आतंकवाद से गठबंधन है। दोनों के अंदर ही तालिबानी मानसिकता है क्योंकि जिस अफगान सेना को अमेरिका ने 20 सालों से तैयार किया था वह ताश के पत्तों की तरह बिखर गयी। कई राज्यों ने तो बिना लड़े ही तालिबान के आगे समर्पण कर दिया।.....

अंपासा पलट गया या पहले से ही पलटा पलटाया पड़ा था? अब बन्दूक की नोक से थोड़ी बहुत औपचरिकता थी वो भी पूरी हो गयी। यानि काबुल की सत्ता पर तालिबान बैठ गया। अफगान राष्ट्रपति गनी अफगानिस्तान छोड़कर भाग गया। पूरी दुनिया अब विश्लेषण करने में लगी पड़ी है कि आखिर इतना जल्दी कैसे क्या हुआ? मात्र कुछ हजार तालिबानी, काबुल की लाखों की सेना को परास्त करके राष्ट्रपति गनी की कुर्सी पर अपनी सेल्फी ले रहे हैं।

आज विश्व भर के राजनितिक विश्लेषक दुनिया को बता रहे हैं कि तालिबानी लड़ाके काबुल में प्रवेश कर चुके हैं। दुनिया भर के सवाल जवाब हो रहे हैं। कहानियाँ लिखी जा रही हैं, तालिबान का वर्जन 2 कैसा होगा? अफगानी शरणार्थी कहाँ जायेंगे? अब वहां महिलाओं की स्थिति कैसी होगी? हालाँकि कुछ को अमेरिका शरण दे रहा है और कुछ को भारत। लेकिन मुस्लिम देश क्यों शरण नहीं दे रहे हैं इस पर कोई विश्लेषण नहीं हो रहा है! और ना होगा। आगे हो सकता है कि कुछ बच्चों की लाशें अखबार के पन्नों पर फेंक दी जायें और सेड म्यूजिक के साथ रोते बिलखते एंकर आयेगी इससे गैर इस्लामिक जगत संवेदनशील होगा और शरणार्थी शरण पा जायेंगे।

कहा जा रहा है अफगानिस्तान तो भारत का मित्र है। लेकिन कैसे समझाएं कि दो देशों की कोई मित्रता नहीं होती। कोई रिश्तेदारी नहीं होती। उनके सम्बन्ध आपसी व्यापार और फायदे पर टिके होते हैं। अभी तक रूस भारत का मित्र था, क्योंकि सभी हथियार वहां से आते थे। अब भारत जैसे ही अमेरिका और यूरोपीय देशों के निकट गया। तब रूस पाकिस्तान की मित्रता आगे बढ़ गयी। ऐसे ही अब गनी रफूचक्कर हो गया दोस्ती भी रफूचक्कर हो गयी। यहाँ से आगे अफगानिस्तान, पाकिस्तान का दोस्त होगा क्योंकि तालिबान पाकिस्तान से हथियार लेगा।

ऐसे तमाम विश्लेषण सामने आ रहे हैं लेकिन इन विश्लेषणों में असली सवाल दबकर रह गये कि तालिबान ने थोड़े ही दिन में पूरे अफगानिस्तान पर कब्जा कर लिया! दुनिया के तमाम वामपंथी न्यूज पेपर, पोर्टल, टीवी एंकर इसके लिए अमेरिका को दोष देने में लगे हैं। ताकि पाकिस्तान, चीन और रूस को क्लीनचिट दी जा सके। क्या आज से 20 साल पहले अमेरिका ने अफगानिस्तान पर हमला सिर्फ इसलिए किया था कि वहां शासन करे? शायद नहीं! क्योंकि अफगानिस्तान पर हमला सिर्फ इसलिए किया था कि तालिबान ने ओसामा बिन लादेन को उनको देने से मना कर दिया था। अगर वो ओसामा को दे देते तो अमेरिका हमला ही नहीं करता।

ओसामा को मारने के बाद भी अमेरिका ने अफगानिस्तान की सेना और धन से बहुत मदद की। अफगान सेना को उच्च क्वालिटी की ट्रेनिंग दी, हथियार दिए पैसा दिया। अब तालिबान से लड़ने की जिम्मेदारी अफगान सेना और जनता की थी। जिसमें वे विफल रहे। और शायद वे लड़ना भी नहीं चाहते! कारण शायद खुद उनकी मानसिकता भी तालिबानी है। अफगानी जनता ही नहीं अधिसंख्य मुस्लिम समाज की मानसिकता ही तालिबानी है।

इसका जीता जागता उदहारण ये है कि अफगानिस्तान के सुरक्षा बलों की अधिकृत संख्या तीन लाख 52 हजार है। जुलाई, 2020 तक अफगानिस्तान के रक्षा मंत्रालय में इनकी संख्या एक लाख 85 हजार 478 थी। इसके तहत सेना, वायु सेना और स्पेशल ऑपरेशन फोर्सेज (एसओएफ) आती हैं। अफगानिस्तान के आंतरिक मंत्रालय में यह संख्या एक लाख तीन हजार 224 है। इसके तहत विभिन्न पुलिस बल आते हैं। इन्हें मिलाएं तो सुरक्षा बलों के कुल अधिकारियों की संख्या दो लाख 88 हजार 702 बैठती है। साल 2019 में जारी किए गए अफगान नेशनल आर्मी (एएनए) के आंकड़ों के अनुसार अफगानिस्तान की सेना में करीब एक लाख 80 हजार सैनिक हैं। जिनकी अब काफी संख्या बढ़ चुकी है। 167 लड़ाकू विमान भी है जबकि तालिबान के पास ना कोई लड़ाकू विमान है और उनकी संख्या कुल 70 हजार के आसपास बताई जाती है। अफगान आर्मी का रक्षा बजट करीब साढ़े पांच बिलियन डालर है और तालिबान का डेढ़ अरब फिर तालिबान क्योंकर जीत रहे हैं ये बड़ा आश्चर्य है।

लेकिन क्या इसमें सच में आश्चर्य है शायद नहीं क्योंकि कहानी साफ है 1962 में चीन की सेना ने अरुणाचल प्रदेश के आधे से भी ज्यादा हिस्से पर कब्जा कर लिया था। लेकिन स्थानीय लोगों द्वारा चीनी सेना के प्रति विद्रोह हुआ और आम अरुणाचल वासियों ने ही चीन की सेना वापिस लौटने पर मजबूर कर दिया था। लेकिन अफगानिस्तान में ऐसा कुछ देखने को नहीं मिला। तालिबान एक के बाद एक प्रान्त पर कब्जा करते चले गये और अफगानी नागरिक उसे स्वीकार करते चले गये। मसलन जब अफगान लोगों को ही तालिबान पसंद है तो हम क्या करें? कहीं ना कहीं वो भी खुद तालिबानी मानसिकता से पीड़ित है! मात्र कुछ हजार अमेरिकी सैनिक तालिबान को बीस साल तक दबाये बैठे रहे और आज उनके निकलते ही लाखों की अफगान फौज हार गयी हो तो सोचिये अफगान सैनिक किसके साथ थे?

दूसरा आखिर क्या कारण है की 56 मुस्लिम देशों मे से किसी ने भी तालिबान का विरोध नहीं किया। किसी सेक्यूलर, मुस्लिम उदारवादी ने तालिबान का विरोध नहीं किया। रिहाना ग्रेटा का कोई ट्वीट नहीं आया। *- शेष पृष्ठ 6 पर*

हैदराबाद सत्याग्रह स्मृति दिवस पर विशेष

हैदराबाद सत्याग्रह आंदोलन का भावपूर्ण इतिहास : आर्य बलिदानियों को शत शत नमन

हैदराबाद राज्य में सन 1920 में आर्य समाज की स्थापना हुई। इसके बाद दो-तीन सालों में ही व्यवस्थित ढंग से काम करने वाली लगभग दो सौ शाखाएं खुल गई। निज़ामी राज्य में हैदराबाद के विनायकराव कोरटकर आर्य समाज के अध्यक्ष और बंसीलालजी मंत्री थे। उन्होंने उदगीर में अपना मुख्य कार्यालय खोला। उन्होंने "वैदिक संदेश" नामक वृत्तपत्र सोलापुर से प्रकाशित करना शुरू किया। "वैदिक संदेश" को निज़ाम स्टेट में सभी स्थानों पर पहुँचाने की व्यवस्था की गई। आर्य समाज अत्यंत अनुशासनप्रिय और ध्येयवादी संगठन के रूप में कार्य करने लगा। मातृभूमि के प्रति निश्छल प्रेम और वैदिक धर्म पर प्रगाढ़ निष्ठा, इन दो मानबिंदुओं के लिए हर आर्य समाजी अपनी जान की भी बाजी लगाने को तैयार रहता था। हैदराबाद राज्य के बहुसंख्यक समाज का कोई रखवाला नहीं था। उलटे हिंदुओं को समाप्त करने के लिए खाकसार पार्टी, निज़ाम सेना, इत्तेहादुल संगठन, दीनदार सिद्दीक़ के धर्मप्रचारक अनुयायी, सबने कोहराम मचा रखा था। सब समझ चुके थे कि इन सबका प्रतिकार करने वाला, हिंदुओं का एकमात्र संगठन आर्य समाज ही है। उत्तर भारत से सैंकड़ों आर्य समाजी कार्यकर्त्ता अपनी जान की परवाह किये बिना, निजाम राज्य में चले आये । विशेषकर मराठवाडा में कई आर्य समाजी नेता और कार्यकर्ता निजाम के खिलाफ लड़ने के लिए तैयार हो गए ।

2/9/1929 को "दीनदार सिद्दीक़ पार्टी" नामक इस्लाम धर्म प्रसारक संस्था की स्थापना हैदराबाद राज्य में हुई । दीनदार सिद्दीक़ स्वयं को चन्बसवेश्वर का अवतार बताते थे, और कहते थे कि भगवान् बसवेश्वर के विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए ही इस्लाम धर्म है। इस प्रकार गुमराह करके दीनदार सिद्दीक़ और उनके अनुयायियों ने हिंदुओं को इस्लाम धर्म में परिवर्तित करना शुरू किया। अपने प्रचार-प्रसार में वे राम और कृष्ण जैसे हिंदुओं के महापुरुषों का अपमान करते और इस्लाम को दुनिया का सर्वश्रेष्ठ धर्म बताते। 1929 में आर्य समाजी आंदोलन में भी तेज़ी आयी। 1930 में हैदराबाद राज्य के प्रत्येक जिले में आर्य समाज का संगठन खड़ा होने लगा। उद्गीर के भाई बंसीलाल और श्यामलाल, इन दोनों बंधुओं ने राज्य मे भरपूर कार्य किया। हिंदू समाज में फैली कमजोरी और हीनभावना को नष्ट कर, उसे पूरे स्वाभिमान और गर्व से जीना आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं, बै. विनायकरावजी विद्यालंकार, पं.नरेंद्र जी आर्य आदि ने सिखाया।

अपने राज्य में आर्य समाज के बढ़ते प्रभाव को देख कर निजाम की वक्र दृष्टि आर्य समाज पर पड़ी। 1935 में निलंगा में सरकार ने अपने गुंडों के माध्यम से एक हवनकुंड और एक आर्य समाज मंदिर ध्वस्त कर दिया। किसी के हाथ में "सत्यार्थ प्रकाश" पुस्तक देखते ही निजामी पुलिस उसे गिरफ्तार कर लेती। निलंगा की घटना से शेषरावजी वाघमारे (पिताजी-आनंद मुनिजी) और उनके सहयोगी कार्यकर्त्ताओं के क्रोध की सीमा न रही। शेषरावजी निर्भीक, साहसी, संगठन-कुशल और बुद्धिमान नेता थे। उन्होंने इस अत्याचार का बदला लेने के लिए हजारों लोगों को गाँव-गाँव में, शस्त्रों से सुसज्जित आर्य समाज का संगठन स्थापित करने के लिए प्रेरित किया। भाई बंसीलाल जी, श्याम लाल जी, शेषरावजी, दत्तात्रेय प्रसाद, गोपाल देव शास्त्री आदि आर्य समाजी कार्यकर्ताओं ने गांव-गांव घूम कर हिंदुओं को वैदिक धर्म के ध्वज तले हथियारों समेत एकत्रित किया। अनगिनत गांवों में आर्य समाज मंदिर स्थापित हुए। इत्तेहादुल पार्टी या रजाकार की ओर से आक्रमण होने का कोई भी अंदेशा होता, तो आर्य समाज मंदिर से संकेत की आवाज सुन घर-घर से पुरुष और 18-20 साल के लड़के लाठियां, कुल्हाड़ी, भाले, बरछियाँ, तलवारें, बंदूके आदि लेकर आर्य समाज मंदिर की ओर दौड़ पड़ते। 5-10 मिनट में ही सभी, पूरे अनुशासित तरीके से मुकाबले के लिए तैयार हो जाते। खाकसार पार्टी, दीनदार सिद्दीक़ पार्टी, इत्तेहादुल संगठन और रज़ाकार के पीछे सरकार थी। इसलिए वे सभी हिंदुओं के खिलाफ बेरोकटोक हिंसा कर रहे थे ।

.....आर्य समाज के बढ़ते प्रभाव को देख कर निजाम की वक्र दृष्टि आर्य समाज पर पड़ी। 1935 में निलंगा में सरकार ने अपने गुंडों के माध्यम से एक हवनकुंड और एक आर्य समाज मंदिर ध्वस्त कर दिया। किसी के हाथ में "सत्यार्थ प्रकाश" पुस्तक देखते ही निजामी पुलिस उसे गिरफ्तार कर लेती। निलंगा की घटना से शेषरावजी वाघमारे (पिताजी-आनंद मुनिजी) और उनके सहयोगी कार्यकर्ताओं के क्रोध की सीमा न रही। शेषरावजी निर्भीक, साहसी, संगठन-कुशल और बुद्धिमान नेता थे। उन्होंने इस अत्याचार का बदला लेने के लिए हजारों लोगों को गाँव-गाँव में, शस्त्रों से सुसज्जित आर्य समाज का संगठन स्थापित करने के लिए प्रेरित किया। भाई बंसीलाल जी, श्याम लाल जी, शेषरावजी, दत्तात्रेय प्रसाद, गोपाल देव शास्त्री आदि आर्य समाजी कार्यकर्त्ताओं ने गांव-गांव घूम कर हिंदुओं को वैदिक धर्म के ध्वज तले हथियारों समेत एकत्रित किया। अनगिनत गांवों में आर्य समाज मंदिर स्थापित हुए.....

हिंदू व्यक्ति यदि किसी रोहिले या पठान को गलती से भी कुछ कह दे तो वे तुरंत पिस्तौल निकाल लेते और जान से मार डालने की धमकी देते। हिंदुओं के जबरन धर्मांतरण का काम पूरे ज़ोरों से चल रहा था। इस काम को सरकार का पूरा प्रोत्साहन और सहायता थी। सरकार की ओर से इसी काम के लिए तीन सौ से ज्यादा मौलवी वेतन पर रखे गए थे। इस मुहीम को "तबलीत" या "तंज़ीम" कहा जाता था। निजाम ने वेतनभोगी मौलवियों को नियुक्त किया था और हिंदू-मुसलमानों में शांति बनाये रखने के लिए "अमन कमिटियाँ" बनाई थी । ये मौलवी उन कमिटियों में काम करते थे । ये अमन कमिटियाँ सिर्फ दिखावे के लिए थी । ये वेतनभोगी मौलवी अस्पृश्यों की बस्तियों में घूम-घूमकर उन्हें हिंदुओं के खिलाफ बगावत करने के लिए भड़काते थे। ये मौलवी मुस्लिम गुंडों को भी भड़काते । ये गुंडे खुराफात कर के दंगे भड़काते और सरकारी नौकर उनको बचाते। उदाहरण के लिए, तालुका कलंब में अंदुर गाँव में एक खटीक, गाय को काटकर उसका माँस बेचने के लिए बाजार में सड़क पर ही बैठ गया । हिंदुओं ने इस पर आपत्ति की। उससे कहा "चाहो तो अपने घर में तुम गोमाँस बेचो, लेकिन यहाँ बीच सड़क पर मत बैठो ।" पुलिस हवलदार ने ही फौजदार से उसकी तकरार की। लेकिन फौजदार साहब ने तो हद ही कर दी !! वे खुद उस गाँव में पहुँचे और उस खटीक को सड़क से उठाकर हनुमान मंदिर की चौपाल पर बैठा दिया। हिंदू और क्रोधित हो गए और दंगा भड़कने के आसार नज़र आने लगे। तब फौजदार साहब ने उसे चौपाल से उठाकर मंदिर के सामने बैठा दिया। ऐसे थे वहाँ के सरकारी अधिकारी। ऐसी घटनाओं से आर्य समाज के लोग और संगठित होते गए। साथ ही इत्तेहादुल पार्टी और मुस्लिम गुंडे और भी भड़क उठे।

1938 में गुंजोटी में वेदप्रकाश का खून हो गया। वेदप्रकाश की हत्या का समाचार पाते ही भाई बंसीलाल और वीरभद्र जी आर्य तुरंत गुंजोटी पहुँचे। पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। वेदप्रकाश की हत्या हैदराबाद मुक्ति संग्राम का पहला बलिदान था। उसके बाद भाई श्यामलाल जी को ख़राब खाना और पानी देकर प्रताड़ित किया गया। बीमार होने के बाद भी दवाखाने में नहीं ले जाया गया। अंतत: जेल में ही उन्हें जहर देकर मार दिया गया। हैदराबाद राज्य में 1938-39, इन दो सालों में शहर में हजारों की संख्या में आर्य समाजी लोगों ने सत्याग्रह किया। सोलापुर में माधवराव अणे की अध्यक्षता में एक परिषद् आयोजित की गई ताकी इस सत्याग्रह को हिंदुस्तान की जनता का भी समर्थन मिल सके। इस परिषद् मे "हैदराबाद विरोध दिवस" मनाने का प्रस्ताव पारित किया गया। सारे हिंदुस्तान भर में "हैदराबाद विरोध दिवस" का माहौल बनने लगा। भारत भर से कई आर्य समाजी सत्याग्रह में भाग लेने के लिए हैदराबाद स्टेट पहुँचने लगे। सोलापुर, राजस्थान, दिल्ली, नागपुर, उत्तर प्रदेश, रावलपिंडी से हजारों कार्यकर्ता हैदराबाद में दाखिल हुए। अनगिनत सत्याग्रहियों को जेलों में ठूंस दिया गया। कईयों को पीटा गया। ख़राब खाना और पानी देने के कारण कई सत्याग्रही बीमार पड़ गए। उसमें भी हद तो तब हो गई, जब इत्तेहादुल संगठन के गुंडे जेलों में घुस कर पुलिस के सामने, सत्याग्रहियों को बेरहमी से मारने-पीटने लगे। इस अत्याचार में एक कार्यकर्त्ता सदाशिव विश्वनाथ पाठक की 12-08-1939 को हैदराबाद जेल में मृत्यु हो गई। राजस्थान के स्वामी ब्रह्मानंद जी का भी चंचलगुडा जेल में निधन हो गया। दिल्ली के शांति प्रकाश जी की भी हैदराबाद जेल में 27-07-1939 को मृत्यु हो गई। नागपुर के पुरुषोत्तम प्रभाकर की 16-12-1938 को हैदराबाद जेल में, उत्तर प्रदेश के माखन सिंह की 01-07-1939 को हैदराबाद जेल में, रावलपिंडी के पंडित परमानंद जी की 05-04-1939 को हैदराबाद जेल में, उत्तर प्रदेश के स्वामी कल्याणानंद जी की 08-07-1939 को गुलबर्गा जेल में, बैंगलोर के स्वामी सत्यानंद जी को चंचलगुडा जेल में, विष्णु भगवंत अंदुरकर की 02-05-1939 को चंचलगुडा जेल में, व्यंकटराव कंधारकर की 09-04-1939 को निजामाबाद जेल में मृत्यु हुई । उमरी, जिला नांदेड में गणपतराव, गंगाराम और दत्तात्रेय इन तीन आर्य समाजी प्रचारकों को पठानों ने पत्थरों से पीट-पीट कर मार डाला ।

1942 में उद्गीर में बै. विनायकराव जी विद्यालंकार की अध्यक्षता में एक परिषद् हुई। इस परिषद् में निजामी पुलिस, रज़ाकारों और अमानवीय अत्याचार करने वाले सभी घटकों को चेतावनी दी गई। तब पुलिस और मुस्लिम संगठनों की ओर से हिंदुओं के घरों और दुकानों पर ज़ोरदार हमले किये गए। हुमनाबाद में एक जुलुस पर पुलिस ने गोलियाँ चलाई जिससे 5 लोग मारे गए।

- शेष अगले अंक में

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (30 अगस्त) पर विशेष

योगीराज श्रीकृष्ण जी के 5249वें जन्मदिन की हार्दिक बधाई

हमारी वैदिक संस्कति में महा पुरुषों के जन्मदिन मनाने की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। हमारे यहां मर्यादा पुरुर्षोत्तम श्री रामचंद्र जी, योगिराज श्रीकृष्ण चंद्र जी, महर्षि दयानंद सरस्वती जी और अन्य महान विभूतियों का समय-समय पर जन्मोत्सव मनाया जाता रहा है। वर्तमान में योगिराज श्रीकृष्ण का 5249 जन्मदिवस 30 अगस्त को पूरे देश और दुनिया में मनाया जाएगा। आईए, योगेश्वर श्रीकृष्ण के जीवन से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को गरिमा प्रदान करें।

प्रेरणा के प्रकाश पुंज- योगेश्वर श्रीकृष्ण

भारतीय संस्कृति के उन्नायक, योगेश्वर श्रीकृष्ण का संपूर्ण जीवन मानवमात्र के लिए सद्प्रेरणाओं का प्रकाश पुंज है। बालक, विद्यार्थी, शिक्षक, मित्र, उपदेशक, योद्धा, याज्ञिक, तत्वदर्शी, सिद्ध-साधक, उपासक और महान योगी आदि सभी रूपों में श्रीकृष्ण जीवन दर्शन अद्वितीय एवं अनुकरणीय है। अधर्म को मिटाकर धर्म की स्थापना, अन्याय को हटाकर न्याय का पक्ष लेना, विषम से विषम परिस्थिति में संतुलित रहते हुए समाज को सुमार्ग दिखाना, विषाद से बचाकर प्रसाद की राह दिखाना इत्यादि योगेश्वर श्रीकृष्ण महाराज की अदभुत शिक्षाएं हैं। गीता के हर अध्याय के साथ योग शब्द जुड़ा हुआ है। इसका मतलब हर मनुष्य को योगमय जीवन जीना चाहिए।

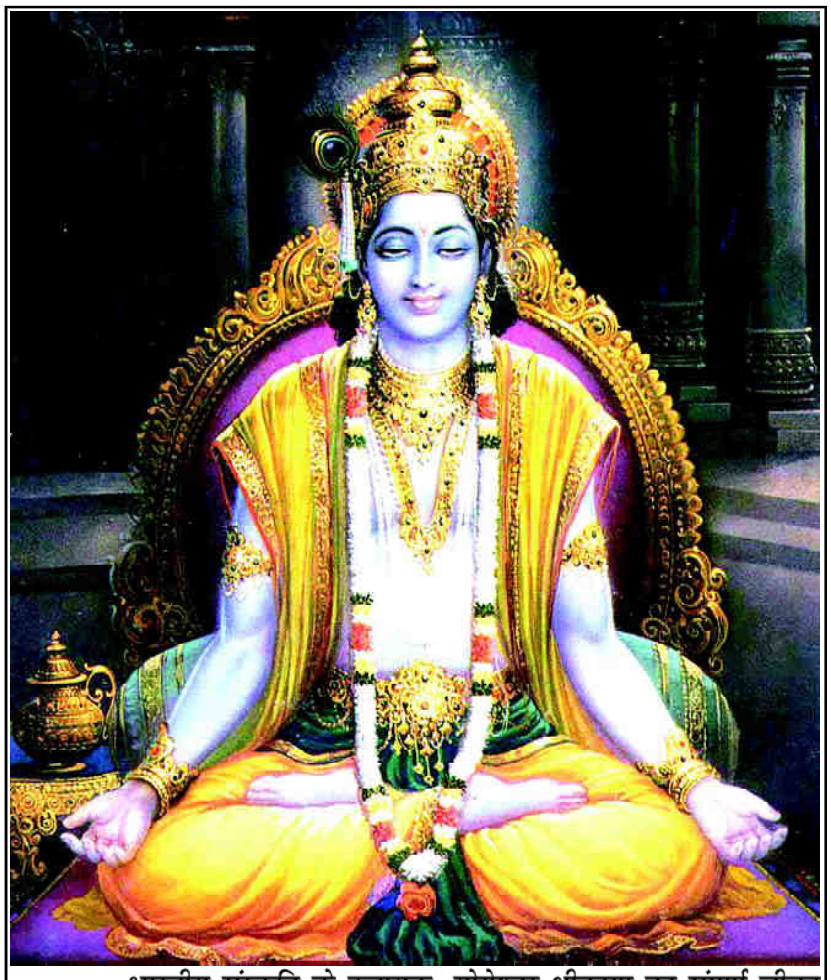

.....भारतीय संस्कृति के उन्नायक, योगेश्वर श्रीकृष्ण का संपूर्ण जीवन मानवमात्र के लिए सद्प्रेरणाओं का प्रकाश पुंज है। बालक, विद्यार्थी, शिक्षक, मित्र, उपदेशक, योद्धा, याज्ञिक, तत्वदर्शी, सिद्ध-साधक, उपासक और महान योगी आदि सभी रूपों में श्रीकृष्ण जीवन दर्शन अद्वितीय एवं अनुकरणीय है। अधर्म को मिटाकर धर्म की स्थापना, अन्याय को हटाकर न्याय का पक्ष लेना, विषम से विषम परिस्थिति में संतुलित रहते हुए समाज को सुमार्ग दिखाना, विषाद से बचाकर प्रसाद की राह दिखाना इत्यादि योगेश्वर श्रीकृष्ण महाराज की अदभुत शिक्षाएं हैं। गीता के हर अध्याय के साथ योग शब्द जुड़ा हुआ है। इसका मतलब हर मनुष्य को योगमय जीवन जीना चाहिए।.....

श्रीकृष्ण संदेश

आज मानव समाज भय-चिंता-तनाव और अवसाद में डूबा हुआ है। इस भयावह स्थिति के निवारणार्थ श्रीकृष्ण का संदेश है- **"समत्वं योग उच्यते"** अर्थात् सुख-दु:ख, हानि-लाभ-मान-अपमान, जय-पराजय हर स्थिति-परिस्थिति में समभाव में रहना ही योग है। हर हाल में, हर काल में, हर स्थिति में, हर परिस्थिति में संतुलन बनाकर चलने वाला ही योगी है। श्रीकृष्ण का कथन है **"योग:कर्मसु कौशलम"** कर्म की दक्षता-कुशलता ही योग है। इसलिए अपने हर कर्म को कुशलता पूर्वक करें, सोच-समझकर निर्णय लें, उचित समय पर कार्य करने की आदत डालें। अगर मनुष्य श्रीकृष्ण की शिक्षाओं को मानकर उन्नति प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ेगा तो जीवन अवश्य सफल होगा।

जरा सोचिए, हम क्या से क्या हो गए.....

योगेश्वर श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव संपूर्ण भारत में ही नहीं विश्व में मनाया जाता है। महीनों पूर्व ही इस महोत्सव की तैयारियां शुरू हो जाती हैं, मंदिरों को सजाया जाता है। जो कि अपने आपमें अच्छी बात है। किंतु जो श्रीकृष्ण इस पुण्यमय भारत की महान संस्कृति और संस्कारों, आदर्शों, प्रेरणाओं के आधार स्तंभ हैं, ज्ञानियों में अग्रणी वेदज्ञ, नीतिज्ञ, त्यागी-तपस्वी, धर्मात्मा महापुरुष हैं, उनके नाम पर अपमान पूर्ण बातें बनाकर ऊंची लाउडस्पीकर की आवाज में उन्हें माखन चोर, छलिया, रणछोड़, रासलीला रचाने वाला, हजारों पत्नियां रखने वाला, आदि तुकबंदी करके गाना-बजाना-नाचना करना, हुल्लड़ करना, ऐसे ही बेतुके नाटकों का मंचन करना, बेढंगी झांकियां निकालना आदि क्या श्रीकृष्ण जन्मोत्सव का उचित स्वरूप है? जरा सोचिए, इस सारे कृत्य से समाज पर क्या प्रभाव पड़ रहा है, आज धर्म, संस्कृति और संस्कारों का स्वरूप बिगड़ता जा रहा है, नैतिक मानवीय मूल्यों का पतन हो रहा है, रिश्ते-नातों में रूखापन है, संस्कृति-सभ्यता दम तोड़ रही है, चारों तरफ, निराशा-हताशा-उदाशी-चिंता-भय- भ्रम का वातावरण है। धर्म के नाम पर लोभ-लालच-स्वार्थ सिर चढ़कर बोल रहा है।

भागने का नहीं, जागने का संदेश देते हैं- श्रीकृष्ण

योगेश्वर श्रीकृष्ण जी महाराज का सही अर्थों में जन्मदिन मनाएं, उनकी प्रेरणाओं को अपनाएं, निराशा-उदाशी-चिंता, भय-भ्रम को दूर भगाएं, आशा-उत्साह-उमंग-उल्लास को धारण करें, स्व कर्त्तव्य-अकर्तव्य का मर्म समझें, व्यक्ति-परिवार समाज-देश और दुनिया में श्रीकृष्ण के पवित्र संदेश को जन-जन तक पहुंचाने हेतु उपयोगी, सहयोगी और योगी बनें, जीवन की पगदण्डियों पर निरंतर आगे बढ़ते जाए, न रुकें-न झुकें-न थकें, अपने कर्त्तव्यों को निरंतर करते जाए। योगेश्वर श्रीकृष्ण मनुष्य को लकीर का फकीर बनने की प्रेरणा नहीं देते वे तो मनुष्य के सर्वांगीण विकास के पक्षधर हैं। उन्होंने मानवमात्र को भागने की नहीं जागने का संदेश दिया है। श्री कृष्ण के जीवन की प्रत्येक घटना मनुष्य को लक्ष्य प्राप्ति का संदेश देती है। राक्षसों, अत्याचारियों, अधर्मियों के विशाल दुर्ग को ध्वस्त करने की उनकी नीति और पराक्रम यह दर्शाता है कि दुष्ट प्रवर्ति कितनी ही ताकतवर क्यों न हो लेकिन उसका अंत जरूर होता है। जबकी सज्जन, धार्मिक और सत्य को मानने वाले के जीवन में चाहे कितने भी कष्ट क्यों न आ जाए लेकिन जीत धर्म की ही होती है।

धर्म धारण करने का उपदेश

योगीराज श्रीकृष्ण युधिष्ठिर को संबोधित करते हुए कहते है कि हे युधिष्ठिर मैं तुम्हारे पक्ष में इसलिए नहीं खड़ा हूं कि तुम मेरी बुआ कुंती के पुत्र हो बल्कि मैं तो तुम्हारे साथ इसलिए हूं क्योंकि तुम धर्म की लड़ाई लड़ रहे हो। धर्म तुम्हारी कर्त्तव्यनिष्ठा में समाया हुआ है और तुम हर हाल, हर स्थिति में धर्म का अनुसरण कर रहे हो। इससे ज्ञात होता है कि हर मनुष्य को जीवन की बड़ी से बड़ी आपदा और समस्याओं में धर्म को नहीं छोड़ना चाहिए। जो धर्म की रक्षा करता है धर्म उसकी रक्षा करता है। धर्म के विषय में दुर्योधन ने स्वयं कहा कि मैं जानता हूं कि धर्म क्या है? लेकिन मेरी धर्म में प्रवर्ती नहीं होती और मैं ये भी जानता हूं कि अधर्म क्या है उसमें मेरी प्रविर्ती रहती है। श्रीकृष्ण का धर्म को लेकर यही संदेश है कि मनुष्य को धर्म में प्रर्वत रहना चाहिए।

योगीराज श्रीकृष्ण के विषय में महापुरुषों के उदगार

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है। "देखो ! श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरणपर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा। और इस भागवत वाले ने अचुचित मनमाने दोष लगाए हैं। दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी; और कुब्जादासी से समागम, परस्त्रियों से रासमण्डल क्रीडा आदि मिथ्या दोष श्रीकृष्ण जी में लगाये हैं। इस को पढ़-पढ़ा, सुन-सुना के अन्य मत वाले श्रीकृष्ण जी की बहुत सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न होता तो श्रीकृष्ण जी के सदृश महात्माओं की झूठी निन्दा क्योंकर होती ?"

-महर्षि दयानंद सरस्वती

श्रीकृष्ण के धुरंधर विरोधी भी उनका सम्मान करते थे। महाभारत उद्योग पर्व (88/5) में दुर्योधन भी कहता है कि "यह मैं भली भांति जानता हूँ कि तीनों लोकों में इस समय यदि कोई सर्वाधिक पूज्य व्यक्ति है तो वह विशाल-लोचन श्रीकृष्ण हैं।"

धृतराष्ट का कथन है कि "श्रीकृष्ण अपने यौवन में कभी पराजित नहीं हुए। उनमें इतने विशिष्ट गुण हैं कि उनकी परिगणना करना सम्भव नहीं है।"

- महाभारत द्रोणपर्व 18

महाभारत के अन्य नायकों ने भी श्रीकृष्ण की भरपूर प्रशंसा की है। वेदव्यास कहते है "श्रीकृष्ण इस समय मनुष्यों में सबसे बड़े धर्मात्मा, धैर्यवान् तथा विद्वान हैं।"

- महाभारत अध्याय 83

भीष्म पितामह - "श्रीकृष्ण द्विजातियों में ज्ञानवृद्ध तथा क्षत्रियों में सर्वाधिक बलशाली हैं। पूजा के ये दो ही मुख्य कारण होते हैं जो दोनों श्रीकृष्ण में विद्यमान है। वेद-वेदांग के अद्वितीय पण्डित तथा बल में सबसे अधिक हैं। दान, दया, बुद्धि, शूरता, शालीनता, चतुराई, नम्रता, तेजस्विता, धैर्य, सन्तोष इन गुणों में केशव से अधिक और कौन है?"

- महाभारत सभा पर्व 38/18-20

अर्जुन - "हे मधुसूदन! आप गुणों के कारण अद्वितीय हैं। आप के स्वभाव में

- शेष पृष्ठ 8 पर

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) ने मानी आर्यसमाज की मांग

दार्शनिकों की सूची में महर्षि दयानंद सरस्वती का नाम सम्मिलित किए जाने का दिया आश्वासन

आर्यसमाज की मांग को लेकर मूर्धन्य संन्यासी एवं सांसद श्री स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती ने की केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री से भेंट

आर्य समाज के संस्थापक, महान समाज सुधारक, चिंतक और लेखक महर्षि दयानंद सरस्वती जी का संपूर्ण जीवन राष्ट्र निर्माण तथा मानव समाज को सुदिशा प्रदान करने के लिए समर्पित था। महर्षि दयानंद के उपकारों के प्रति भारत राष्ट्र एवं विश्व समाज हमेशा से कृतज्ञ है और रहेगा। अभी कुछ दिन पूर्व विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) द्वारा दर्शनों के नए पाठ्यक्रम में इकाई-5(v) में समकालीन 19-20वीं शताब्दियों के दार्शनिकों की सूची में महर्षि दयानंद सरस्वती का नाम न होने के कारण भारत के कोने-कोने में और विदेशों में आर्य समाज एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारी, कार्यकर्त्ताओं को बड़ी ठेस पहुंची थी। अत: सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संपूर्ण आर्य समाज की ओर से माननीय धर्मेंद्र प्रधान जी, मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सरकार को पत्र भेज कर मांग की गई थी कि महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका सहित दो दर्जन से अधिक ग्रंथों तथा उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज की ओर से संचालित परोपकारी योजनाओं से मानव समाज का कायाकल्प हुआ है, महर्षि के दिखाए रास्ते पर ही चलकर भारत में शिक्षा की क्रांति का सूत्रपात हुआ था, ज्ञात हो कि आर्य समाज द्वारा जारी इस पत्र में महर्षि की प्रेरणा से प्रेरित महापुरुषों के उदाहरण भी दिए थे, इस पत्र के साथ साथ आर्य समाज का भारत की संसद में नेतृत्व करने वाले मूर्धन्य संन्यासी स्वामी सुमेधानंद सरस्वती जी सांसद, सीकर लोकसभा एवं डॉ. सत्यपाल सिंह जी, सांसद, बागपत लोकसभा ने भी अपना अतुलनीय योगदान दिया। परिणामस्वरूप शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान जी ने आर्य समाज को आशवस्त किया कि महर्षि दयानंद सरस्वती जी का नाम यू.जी.सी. द्वारा 19-20वीं सदी के समकालीन दार्शनिकों की सूची में सम्मिलित किया जायेगा। इसके लिए समस्त आर्यसमाज को बधाई और धन्यवाद।

केन्द्रीय शिक्षामन्त्री, भारत सरकार श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी को महर्षि दयानन्द जी का अमूल्य ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश, उनकी जीवनी एवं ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका भेंट करते आर्य संन्यासी एवं सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती।

Regn. No. S - 8149/1976
Email : aryasabha@yahoo.com
Web : www.thearyasamaj.org

ओ३म्

२३३६०१५०
२३३६५६५६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं०)
The Delhi Arya Pratinidhi Sabha
१५–हनुमान् रोड, नई दिल्ली – ११०००१

क्रमांक : 2021-22/158/दिल्ली सभा   दिनांक : 8 जुलाई, 2021

प्रतिष्ठा में,
श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी
मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सरकार
शास्त्री भवन, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद रोड,
नई दिल्ली-110001

विषय : यू.जी सी द्वारा 19 वीं, 20 वीं शताब्दियों के दार्शनिकों के क्रम में महर्षि दयानंद सरस्वती जी का नाम सम्मिलित करने हेतु निवेदन

महोदय,

सादर नमस्ते !

हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप स्वस्थ एवं सानंद होंगे

जैसा कि आप जानते ही हैं कि आर्य समाज के संस्थापक, महान समाज सुधारक, लोकोपकारी महर्षि दयानंद सरस्वती जी भारत की ऋषि परम्परा में अग्रणी रहे हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) ने **दर्शन के नए पाठ्यक्रम में ईकाई-5(V) में समकालीन 19 वीं, 20 वीं शताब्दियों के दार्शनिकों में अन्य 15 नामों की सूची दी है, जिसमें महान चिंतक, दार्शनिक, लेखक, योगी, समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का नाम** नहीं पाकर भारत के कोने-कोने में तथा विदेशों में आर्यसमाज एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं सदस्यों के मन आहत हैं। क्योंकि महर्षि दयानन्द सरस्वती समकालीन भारतीय दर्शनिकों में ऊंचा स्थान रखते थे। महर्षि जी द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका सहित दो दर्जन से अधिक ग्रन्थ मानव समाज में जन कल्याणकारी क्रांति का सूत्रपात करने वाले सिद्ध हुए हैं। महर्षि की दार्शनिक प्रेरणा के प्रताप से प्रेरित स्वामी श्रद्धानंद, महात्मा हंसराज, लाला लाजपत राय, पंडित लेखराम, गुरुदत्त विद्यार्थी, श्यामजी कृष्ण वर्मा, वीर सावरकर जैसे हजारों-लाखों राष्ट्रभक्तों ने अपना सर्वस्व भारतीय संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों की रक्षा के लिए समर्पित किया है। महर्षि दयानन्द जी द्वारा स्थापित आर्य समाज वैदिक मार्ग पर चलते हुए अनेक गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, अनाथालय, डी.ए.वी. शिक्षण संस्थानों के माध्यम से मानव निर्माण में संलग्न है।

भारत सहित विश्व की सभी आर्य समाजों, शिक्षण संस्थाओं की ओर से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा मांग करती है कि महर्षि दयानंद सरस्वती जी का आदर्श जीवन दर्शन दार्शनिकों की सूची में सम्मिलित करें, जिससे 19वीं-20वीं सदी के महान समाज सुधारक एवं राष्ट्रनिर्माता महर्षि दयानन्द के परोपकारों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की जा सके। उनकी प्रेरक शिक्षाएं जितनी उस समय प्रासंगिक थी उतनी ही आज के समय में भी उपयोगी हैं। महर्षि जी के पावन सन्देशों, उपदेशों से आज की युवा पीढ़ी मानवीय मूल्यों की गरिमा को समझकर, भारतीय वैदिक संस्कृति और संस्कारों का महत्व जानकर राष्ट्र का गौरव बनेगी, जिम्मेदार नागरिक बनेगी और विश्व में भारत का नाम रोशन करेगी। धन्यवाद सहित

भवदीय
(विनय आर्य)
महामन्त्री, मो० : 9958174441

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन एवं सहयोग से आर्य समाज दीवान हॉल चांदनी चौक, दिल्ली में

10 दिवसीय यज्ञ प्रशिक्षण शिविर का आयोजन सम्पन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्य समाज दीवान हाल के प्रांगण में 16 से 25 अगस्त तक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर सहर्ष संपन्न हुआ। इन दिनों में प्रतिदिन प्रात: 8 से 11 एवं सायं 5 से 7 बजे यज्ञ के दो सत्र आयोजित किए गए, जिनमें युवाओं को विधिवत प्रशिक्षण दिया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्वर्धकों सर्वश्री सत्यप्रिय शास्त्री, शिवा शास्त्री, राजबीर शास्त्री, शैल कुमार ने यज्ञ प्रशिक्षण शिविर में भाग लेने वाली युवा शक्ति को यज्ञ का महत्व बताया कि यज्ञ संसार का सबसे श्रेष्ठ कर्म है, यज्ञ से वातावरण शुद्ध होता है और मानव कल्याण का मार्ग प्रशस्त होता है, हमारी संस्कृति यज्ञीय संस्कृति है, यज्ञ के माध्यम से ही हमारे 16 संस्कार सम्पन्न होते हैं, पूरा संसार यज्ञीय भावना पर टिका हुआ है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन यज्ञ अवश्य करना चाहिए।

इस सृजनात्मक शिविर में उपस्थित शिविरार्थियों ने यज्ञ करने और कराने का संकल्प लिया, इस अवसर पर प्रतिदिन संध्योपासना का कार्यक्रम भी सुचारु रूप से चला, शिविरार्थियों ने सन्ध्या करने कराने का भी संकल्प लिया। शिविर के संचालन की सम्पूर्ण व्यवस्था बृहस्पति आर्य के निर्देशन में सभी सम्वर्धक साथियों ने की। आर्यसमाज दीवान हॉल के प्रधान श्री उत्तम कुमार आर्य जी ने सभी शिविरार्थियों को अपनी शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आप सब यज्ञ की अग्नि की तरह उपर उठो, आगे बढ़ो, आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार करो और सफलता के मार्ग पर अग्रसर हों, ऐसी मेरी ईश्वर से प्रार्थना है। मन्त्री श्री सुभाष कोहली जी ने सभी उपस्थित प्रशिक्षुओं को अपनी शुभकामनाएं दी।

प्रशिक्षुओं के साथ यज्ञ करते आर्यसमाज के तदर्थ मन्त्री श्री सुभाष कोहली जी एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्वर्धक।

प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली का निर्वाचन सम्पन्न

निर्विरोध रूप से श्रीमती रचना आहूजा प्रधान निर्वाचित

प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली राज्य का निर्वाचन दिनांक 31 जुलाई, 2021 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली द्वारा नियुक्त निर्वाचन अधिकारी श्री वाचोनिधि आर्य जी एवं सहायक चुनाव अधिकारी श्रीमती इन्द्रा शर्मा जी एवं श्रीमती प्रेमलता मदान जी के निर्देशन एवं अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सार्वदेशिक सभा के आदेश/निर्णय के अनुसार केवल प्रधान पद का निर्वाचन कराया गया। चुनाव प्रक्रिया में निर्धारित तिथि तक प्रधान पद के लिए तीन नामांकन प्राप्त हुए थे। जिनमें से श्रीमती धर्मबाला जी एवं श्रीमती आदर्श मेहता जी द्वारा नाम वापस लिए जाने के कारण शेष एक नामांकन श्रीमती रचना आहूजा जी को निर्विरोध प्रधान घोषित किया गया। आर्य कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर के संविधान के अनुसार प्रान्तीय आर्य महिला सभा की प्रधान द्वारा ही आर्य कन्या गुरुकुल का संचालन किया जाएगा तथा गुरुकुल में की जाने वाली सभी नियुक्तियों का पूर्ण अधिकार प्रान्तीय आर्य महिला सभा की प्रधान को होगा। श्रीमती रचना आहूजा जी द्वारा गठित समितियां-

प्रान्तीया आर्य महिला सभा दिल्ली

कार्य. प्रधान : श्रीमती कृष्णा ठुकराल
व.उप प्रधान : श्रीमती इन्द्रा शर्मा
महामन्त्री : श्रीमती चन्द्रप्रभा अरोड़ा
कोषाध्यक्ष : श्रीमती सरला वर्मा

आर्य कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर

प्रशा.अधि. : श्रीमती शशि प्रभा आर्या
आचार्य : श्रीमती इन्द्रा शर्मा
मन्त्री : श्रीमती विजय रानी
कोषाध्यक्ष : श्रीमती प्रतिभा मल्होत्रा

Makers of the Arya Samaj : Maharishi Dayanand Saraswati

Continue From Last issue

Tour in the U.P.

After this he set out on his travels and began to explain the nature of his mission. Wherever he went he said, "The water of the Ganges can make our body clean, but it cannot make our mind pure. God is everywhere and it is useless to worship idols. As a man sows, so does he reap. Man should, therefore, try to do good and noble deeds."

These noble words of Swami Dayanand were liked by some and were disliked by others. The Brahmins particularly took strong objection to them. One of them, Pandit Hara Ballabh of Karnwas, came forward and challenged Swami Dayanand to argue the matter out with him. The Swami was always glad to do this; and the discussion which was carried on in Sanskrit lasted for a week. But Swami ji won the day and the Pandit found that he could not prove his point. The discussion, however, led to a very interesting development. The Pandit had brought with him his idols and had boasted that he would make Swami Dayanand bow before them. But at the end of the discussion he himself admitted the futility of idol-worship and threw all the idols into the river.

This action of the Pandit was very much criticized by everybody. It was particularly objected to by Rao Karan Singh, of that place. His eyes were red with anger as he went up to Swami ji and spoke insulting words to him.

But Swami Dayanand remained as calm as ever. This further added to the Rao's sense of injury at what had already been done. So he stormed and raged all the more. At this the Swami said, "I am a sanyasi and I do not want to fight anybody. If you want to fight, you will find in the Rajas of Jaipur and Jodhpur your match. You should go to them and not come to me for this purpose. One thing I can do for you, however, and that is to tell you something about religion. If that is what you want you can sit down and listen to me."

.....This is the Guru Dakhshina that I demand of you. The world knows nothing about the Vedas, which are a treasure-house of divine knowledge; you must go all over the country and preach their message to the people. You know that India is full of darkness and ignorance; you must show its people the light of knowledge. The Hindus do not worship the one, true God, but innumerable gods and goddesses. Tell them how wrong it is. Toady Indians follow a large number of religions; you should persuade them to follow the religion preached in the Vedas. Try to abolish all evil customs and teach people the blessings of Brahmcharya or celibacy. The Aryans are in a very miserable plight. Go forth and reform them.....

Rao Karan Singh's fury knew no bounds. He could hardly control himself. He drew his sword from its scabbard and made for the Swami. But Swami Dayanand was prepared for this. As soon as Karan Singh came forward, Swamiji snatched the sword away from his hands.

Then he broke it into two pieces and said, "Please go home and do not think about it any more. I am a sanyasi and it is not my business to fight or to take revenge upon anybody. It is my duty only to endure and to forgive."

Then Karan Singh left the place apparently ashamed of himself. But he planned secretly some kind of revenge on Swami Dayanand. He got hold of some roughs, whom he bribed to murder Swami Dayanand. These desperadoes went to take Swami Dayanand's life but they dare not. No sooner did they see him than their hearts failed. "How can we kill this man who is so holy and godly?" they said to one another. So they went back without doing him any harm.

After this Swami Dayanand visited many places, such as Farukhabad and Kanpur. In the month of October, 1876, he went to Benares. There a very important debate was held between Swami ji on one side and the Brahmins on the other. It is said the opponents of Swamiji numbered several thousands and included, amongst others, the Maharaja ofBenares. Swamij i put his case very well and convinced the Pandits. When they found their arguments were of no avail they began to insult Swamiji. But he remained very cool and calm. The result was that many Brahmins, his opponents only a few minutes before, came to be convinced ofthe truth of his case. This was no mean achievement, for Benares is the stronghold of orthodoxy. Yet Swamiji succeeded in making an impression even there.

To be continued.....

With thanks By: "Makers of Arya Samaj"

पृष्ठ 2 का शेष

काबुल में तालिबान अब आगे क्या .....

अपने देश मे ही किसी मुस्लिम बुद्धिजीवी ने तालिबान का विरोध किया क्या? अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी और जामिया मे कोई प्रोटेस्ट मार्च नहीं निकला? किसी मुल्ले-मौलवी ने तालिबान के खिलाफ फतवा नहीं किया? क्यों वे तालिबान की जीत पर खुश हैं और खुश इसलिए हैं कि वे खुद मानसिकता से तालिबानी हैं और यही मूल समस्या है कि आम मुस्लिम मानसिकता से आज भी तालिबानी है।

उदहारण - ऑर्गेनाइजेशन ऑफ इस्लामिक को-ऑपरेशन यानी इस्लामी सहयोग संगठन ने एक बयान जारी कर कहा है कि वह अफगानिस्तान के संकट से चिंतित हैं। लेकिन तालिबान पर एक शब्द नहीं बोला। कभी तालिबान को अपना दुश्मन मानने वाला शिया देश ईरान आज तालिबान के साथ खड़ा है। उज्बेकिस्तान और ताजिकिस्तान दोनों मुस्लिम देश हैं। लेकिन अफगानी शरणार्थियों अपने देश में घुसने नहीं दे रहे है। तुर्कमेनिस्तान के पहले से ही तालिबान से संबंध मजबूत है वो भी अफगान शरणार्थियों को लात मार रहा है। पाकिस्तान और तालिबान का हमेशा से ही एक रिश्ता रहा है।

तीसरा चिंता का विषय ये है कि सारी दुनिया के कम्युनिस्ट और तथाकथित प्रग्रेसिव लिब्रल की इस विषय में षडयंत्रकारी चुप्पी। गाजा पट्टी और रोहिंग्या मुस्लिम के लिए खून के आँसू रोने वाले ये लिब्रल आज कहाँ चले गए? कोई तालिबान की बात नहीं कर रहा, उल्टे दबे स्वर मे तालिबान की तारीफ ही हो रही है। इसका साफ कारण ये है कि जो आज तालिबान ने किया ऐसा तो कम्युनिस्ट 100 सालों करते आये हैं। वामपंथियों ने क्यूबा पर सेम इसी तकनीक से हमला किया था। रूस में जार को हटाना हो या चीनी क्रांति ये ही तो वर्जन था जिसे आज तालिबान ने लागु किया। कम्युनिस्ट तो स्वयं मे एक आतंकी फासिस्ट विचारधारा है मुस्लिम आतंकवाद के साथ है। यही कम्युनिस्ट सारी दुनिया मे भेष बदल कर लिबरल के रूप मे घुसे हुए हैं। इन कम्युनिस्टों का इस्लामिक आतंकवाद से गठबंधन हैं। दोनों के अंदर ही तालिबानी मानसिकता है क्योंकि जिस अफगान सेना को अमेरिका ने 20 सालों से तैयार किया था वह ताश के पत्तों की तरह बिखर गयी। कई राज्यों ने तो बिना लड़े ही तालिबान के आगे समर्पण कर दिया।

जिम्मेदारी ना भारत की है ना अमेरिका की। जिम्मेदारी है अफगान जनता की, अफगान लोगों की। अफगान के समाज की। सवाल कीजिये की आखिर तालिबानी तालिबान 70 हजार आतंकी कहाँ से ले आया? उसे हथियार और पैसा कहाँ से मिल रहा है? क्यों आज 70 हजार तालिबानी विश्व की महाशक्तियों को आँख दिखा रहे हैं? क्योंकि उसे 56 देशों का समर्थन और इस्लामी तालिबानी मानसिकता का पूर्ण समर्थन मिल रहा है।

अगर आप तालिबान के काबुल पर कब्जे से दुखी द्रवित हैं तो ये दु:ख का विषय नहीं है। क्योंकि ये उनके समाज की मानसिकता का आइना है। इस आईने को सामने खड़े होकर देखिये आप हिन्दू सिख बौद्ध संगठन बनाकर देखों कितने लोग जुड़ते हैं, कितने लोग आपके साथ खड़े होते हैं! लेकिन एक बगदादी खड़ा होता है तो उसे लाखों लड़ाके मिल जाते है। एक ओसामा खड़ा होता है उसे भी हजारों ओसामा मिल जाते हैं। कोई बोकोहरम जब खड़ा होता है उसे भी इस्लाम के लिए लड़ने वाले मिल जाते हैं। सिर्फ अपने देशों से नहीं बल्कि सीरिया और इराक में आई एस आई एस के साथ खड़े होने के लिए तालिबानी मानसिकता को आगे बढ़ाने के लिए मिल जाते है। भारत जैसे देशों के मुस्लिम भी शामिल हो जाते हैं, यूरोप के मुसलमान अरब आ जाते हैं। क्योंकि उनकी नजर में यही सही इस्लाम है। जो आई एस आई एस और तालिबानियों को इस्लाम का सही चेहरा मानते हैं। अभी इस पटकथा का पहला चेप्टर है। दूसरा चेप्टर तालिबान की हिंसा होगी। तीसरे चेप्टर में उसकी निंदा होगी। चौथे में अफगान शरणार्थी गैर मुस्लिम देशों की शरण लेंगे। हर बार यही होता तो अब बस ये देखना है कब से हमें एक-एक चेप्टर पढने को मिलेगा।

- सम्पादक

संस्कृत वाक्य प्रबोध

मिश्रितप्रकरणम्

गतांक से आगे - संस्कृत	हिन्दी
366. पश्य! शारदं नभ:, कथं निर्मलं वर्त्तते।	देखो! शरद् ऋतु का आकाश, कैसा निर्मल है।
367. चन्द्र उदितो न वा?	चन्द्रमा उगा वा नहीं?
368. इदानीन्तु नोदित: खलु।	इस समय तो नहीं उगा है।
369. कीदृश्यस्तारका: प्रकाशन्ते?	किस प्रकार तारे प्रकाक्मान हो रहे हैं।
370. सूर्योदयाच्चलङ्गागच्छामि।	सूर्योदय से चलता हुआ आता हूँ।
371. क्वापि भोजनं कृतङ्ग वा?	कहीं भोजन किया वा नहीं?
372. कृतम्मध्या"नात् प्राक्।	किया था, दोपहर से पहिले।
373. अधुनाऽत्र कर्त्तव्यम्।	अब यहां कीजिये।
374. करिष्यामि।	करूंगा।

क्रमश: - साभार :- संस्कृत वाक्य प्रबोध (प्रकाशित-दिल्ली संस्कृत अकादमी)

खेद व्यक्त - खेद है कि प्रिंटिंग मशीन (प्रैस) में गड़बड़ी आ जाने के कारण साप्ताहिक आर्यसन्देश का गत अंक सं. 40 दिनांक 16 से 22 अगस्त, 2021 प्रकाशित नहीं हो सका, इसके लिए सम्पादक मंडल खेद व्यक्त करता है। - *सम्पादक*

पाणिनि कन्या महाविद्यालय में संस्कृत सप्ताह संपन्न

पाणिनि कन्या महाविद्यालय में 16 अगस्त से 22 अगस्त तक संस्कृत सप्ताह का आयोजन किया गया, जिसमें पांचवी कक्षा से लेकर शास्त्री आचार्य कक्षा पर्यत कन्याओं ने भाग लिया। सभी कक्षाओं के अलग-अलग कार्यक्रम हुए जिनमें भाषण प्रतियोगिता, संस्कृत कथा प्रतियोगिता, अष्टाध्यायी सूत्र अंत्याक्षरी, संस्कृत श्लोक अंत्याक्षरी प्रतियोगिता, गायन प्रतियोगिता संपन्न हुई। इसी के साथ शास्त्रार्थ (वेद में इतिहास है या नहीं), संस्कृत में काव्य पाठ छोटी कन्याओं द्वारा आत्म परिचय, संस्कृत प्रहसन, श्लोक गायन, कजरी, काव्यांलि (कव्वाली), अभिनय गीत आदि अनेक कार्यक्रम सम्पन्न हुए। अंतिम दिन पुरस्कार वितरण समारोह हुआ जिसमें संस्कृत श्लोक व सूत्र अंत्याक्षरी दोनों प्रतियोगिता में शिप्रा आर्या को प्रथम स्थान भाषण प्रतियोगिता में मीरा आर्या (कक्षा 9), शुभांगी आर्या (कक्षा 10), श्रद्धा मिश्रा (कक्षा 11), दिव्यश्री मिश्रा (कक्षा 12), ज्योति - शिवांगी (शास्त्री), दामिनी आर्या (आचार्य), शास्त्रार्थ के पक्ष में मुदिता पांडे विपक्ष में पूजा आर्या को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर गत दिनों लखनऊ में आयोजित कराटे प्रतियोगिता में गोल्ड मेडल प्राप्त आस्था आर्या व नेहा आर्या को भी सम्मान्य अतिथि द्वारा पुरस्कृत कर इनके उज्जवल भविष्य की कामना की गई। इन सभी कार्यक्रमों में मुख्य रूप से डॉ प्रशस्यमित्र शास्त्री रायबरेली, डॉ माधवी तिवारी-डॉ प्रीति वर्मा, डॉ. सुधीर कुमार आर्य ,डॉ. हरिप्रसाद, डॉ. स्वरवंदना शर्मा, स्वामी प्रणवानंद जी, डॉ रत्नेश वर्मा, आर के चौधरी, रतन सिंह, लक्ष्मण माने, अरुणाम्बुज आर्य आदि उपस्थित थे।

- डॉ. नन्दिता शास्त्री, आचार्या

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज मानसरोवर पार्क
शाहदरा, दिल्ली-110032

प्रधान : श्री कपिल त्यागी
मंत्री : डॉ. सन्दीप कुमार
कोषाध्यक्ष : श्री फूलचन्द आर्य

प्रेरक प्रसंग

तो सब पैदल चलेंगे

अभी कुछ दिन पूर्व मुझे एक लेख मिला है। उसमें एक घटना पढ़कर मैं उछल पड़ा। महात्मा हंसराज, प्रि. दीवानचन्दजी, कानपुर तथा प्रिंसिपल साईदासजी श्रीनगर गये। तभी वहाँ आर्यसमाज का उत्सव रक्खा गया। महात्मा हंसराजजी को उनके निवासस्थान से उत्सव के स्थान पर पहुँचाने के लिए डी. ए. वी. कालेज के एक पुराने स्नातक अपना निजी टाँगा लेकर आये। वह स्नातक वहाँ मंसिफ के पद पर थे।

महात्माजी और उनके साथी टाँगे में बैठ गये। मंसिफ महाशय भी बैठ गये। आगे गये तो मार्ग में महाशय ताराचन्दजी भी मिल गये। वे भी उत्सव स्थल की ओर जा रहे थे। वे महाशयजी कौन थे, यह निश्चयपूर्वक कहना कठिन है। उन्हीं ताराचन्दजी ने स्वयं आर्य गजट में यह घटना लिखी। मेरा विचार है कि ये महाशय ताराचन्द (स्वामी अमृतानन्दजी) ही थे। महात्माजी ने उन्हें, भी टाँगे पर बैठने के लिए कहा। उन्होंने कहा, ''नहीं मैं पैदल ही आ जाऊँगा। आप चलिए।''

टाँगे में केवल चार सवारी ही बैठ सकती थी, ऐसा राजनियम था। इसपर महात्मा हंसराजजी ने कहा-''तो हम सब पैदल ही चलेंगे।'' यह कहकर वे उतर पड़े और यह देखकर साथी भी उतर गये। तब मुंसिफ ने कहा ''टाँगा ड्राईवर पैदल आ जाएगा। मैं टाँगे का ड्राईवर बनता हूँ।'' ऐसे शिष्ट एवं विनम्र थे मुंसिफि महोदय और त्यागी तपस्वी महात्मा हंसराजजी!

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आर्ष गुरुकुल एटा में स्वामी ब्रह्मानन्द दंडी जी की 40वीं पुण्यतिथि

7 अगस्त 2021आर्ष गुरुकुल एटा, उत्तर प्रदेश। आर्ष गुरुकुल यज्ञतीर्थ, एटा के स्नातक मंडल द्वारा गुरुकुल के प्रांगण में स्वामी ब्रह्मानन्द दण्डी जी की पुण्यतिथि पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस अवसर पर दिल्ली संस्कृत शिक्षक संघ के अध्यक्ष डॉ ब्रजेश गौतम सहित आर्ष गुरुकुल एटा का स्नातक मंडल और गुरुकुल के ब्रह्मचारी उपस्थित थे। यज्ञ से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इसके उपरान्त स्वामी ब्रह्मानन्द दंडी जी के आदर्शो को स्मरण किया गया और गुरुकुल की उन्नति प्रगति तथा गुरुकुल के प्रेरक इतिहास पर विस्तार से चर्चा की गई। आचार्य वागीश जी, आचार्य प्रेमपाल जी, आचार्य देवराज जी, डॉ ब्रजेश गौतम जी, श्री हेमकुमार विद्यावाचस्पति, संदीप शजर,डॉ अवनीश कुमार और अन्य उपस्थित सम्मानित स्नातकों ने उदबोधन दिए। स्नातक मण्डल द्वारा आर्य समाज हिम्मतपुर काकामई, एटा के संस्थापक आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी, गुरुकुल के मुख्याधिष्ठता आचार्य देवराज शास्त्री जी, स्वामी लक्ष्मणानन्द जी, पं रामस्वरूप जी, श्री चन्द्र प्रकाश जी द्विवेदी आदि महानुभावों का ससम्मान स्वागत, अभिनन्दन किया गया। गुरुकुल मुरशदपुर नौएडा जाकर गुरुकुल एटा व टंकारा में आचार्य रहे श्री विद्यादेवजी को गुरुकुल गौरव सम्मान से अलंकृत किया गया,

शॉल, अंगवस्त्र, स्मृति चिह्न, ड्राई फ्रूट्स की थाली, ओ३म् से अंकित पगड़ी भेंट की गई। गुरुकुल ट्रस्ट के मन्त्री आचार्य सुरेश चन्द्र शास्त्री जी ने सभा संचालन किया। - ***मेधाव्रत शास्त्री, व्यवस्थापक***

आर्यसन्देश साप्ताहिक में बाल आर्य प्रतिभा विकास स्तम्भ

आर्यसन्देश साप्ताहिक के आगामी अंकों में 'बाल आर्य प्रतिभा विकास' का एक नियमित स्तम्भ आरम्भ किया जाएगा। इस स्तम्भ में आर्य परिवारों के सभी होनहार बच्चों को सादर आमन्त्रण है कि वे अपनी विशेष योग्यतानुसार स्वरचित कविता, भजन, महापुरुषों के चित्रों की पेंटिंग, शिक्षा या खेल के क्षेत्र में विशेष उपलब्धि अथवा किसी भी प्रतियोगिता में सफलता प्राप्ति का प्रमाण सहित समाचार बच्चे के फोटो के साथ हमें भेजें। उसे उचित स्थान पर प्रकाशित किया जाएगा। - **सम्पादक**

आर्यसमाज बिडला लाईन्स में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

आर्यसमाज बिडला लाइन्स कमला नगर, दिल्ली-110007 में योगिराज श्री कृष्ण का 5250वां जन्मोत्सव समारोह दिनांक 30 अगस्त, 2021 को सांय 5:30 से 7:30 बजे तक आयोजित किया जाएगा। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य कुंवर पाल शास्त्री एवं यजमान श्रीमती एवं श्री अनिल मलिक होंगे। भजन श्री गौरव आर्य के होंगे। - ***संजीव बजाज, प्रधान***

शोक समाचार

श्री बाल किशन आर्य जी को मातृशोक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व वेद प्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द जी के शिष्य एवं भजनोपदेशक श्री बाल किशन आर्य जी की पूज्य माताजी श्रीमती यशोदा देवी जी का दिनांक 22 अगस्त, 2021 को 96 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा दिनांक 2 सितम्बर को को उनके पैतृक गांव गिडोह, तह. छाता, जनपद मथुरा में सम्पन्न होगी।

बाबू श्याम नारायण जी का निधन

आर्यसमाज मिर्जापुर (उ.प्र.) के समर्पित कार्यकर्ता श्री श्याम नारायण जी का 10 अगस्त, 2021 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया। वे पूर्वाचल आर्यसमाज के स्तम्भ थे। वे अपने मिलने वाले पत्येक नए व्यक्ति को सत्यार्थ प्रकाश अवश्य भेंट करते थे।

श्री बेचन सिंह आर्य जी का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के पूर्व उप प्रधान एवं आर्य वीर दल उ.प्र. के पूर्व अधिष्ठाता श्री बेचन सिंह आर्य जी का 90 वर्ष की आयु में 16 अगस्त को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 17 अगस्त, 2021 को लखनऊ में सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 23 अगस्त, 2021 से रविवार 29 अगस्त, 2021

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 26-27/08/2021 (गुरु-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 25 अगस्त, 2021

असम आर्य प्रतिनिधि सभा सभा भवन में श्रावणी पर्वोत्सव सम्पन्न

22 अगस्त। असम आर्य प्रतिनिधि सभा के गड़चुक स्थित भवन में सीमित लोगों की उपस्थिति में श्रावणी पर्वोत्सव का आयोजन हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ । आर्य समाज मंदिर, डॉ बी बरुआ रोड ने इस कार्यक्रम को आयोजन करने में जो सहयोग प्रदान किया वह चिरस्मरणीय रहेगा ।

उत्सव का प्रारम्भ प्रात: 8.30 बजे से भवन के प्रथम महले में स्थित बहुउद्देश्यीय सभागार में देवयज्ञ के साथ हुआ। यज्ञ के पश्चात भवन के सम्मुख प्रांगण में यज्ञ ब्रह्मा श्री अजित गोस्वामी जी के कर कमलों से ध्वजारोहण किया गया। तत्पश्चात सभागार में श्रीमती मनीषा गोस्वामी जी ने श्रावणी पर्व के विषय में

प्रतिष्ठा में,

परिचय दिया। कुमारी श्रुति शर्मा व प्रभाकर शर्मा ने एक-एक भजन प्रस्तुत किया।

असम आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री प्रभाकर शर्मा जी ने सभी उपस्थित महानुभावों का धन्यवाद किया।

पृष्ठ 4 का शेष

योगीराज श्रीकृष्ण जी के 5249वें .....

क्रोध, झूठ, निर्दयता एवं कठोरतादि दोषों का अभाव है।"

- महाभारत वनपर्व 12/36

युधिष्ठिर - "हे यदुवंशियों में सिंह तुल्य पराक्रमी श्रीकृष्ण! हमें जो यह पैतृक राज्य फिर से प्राप्त हो गया है यह सब आपकी कृपा, अद्भुत राजनीति, अतुलनीय बल, लोकोत्तर बुद्धि-कौशल तथा पराक्रम का फल है। इसलिए हे शत्रुओं का दमन करने वाले कमल नेत्र श्रीकृष्ण! आपको हम बार-बार नमस्कार करते हैं।" *- महाभारत शांति पर्व 43*

आधुनिक काल के प्रसिद्ध लेखक बंकिमचन्द्र श्रीकृष्ण के बारे में लिखते हैं कि, "श्रीकृष्ण जैसा सर्वगुणान्वित और सर्वपाप रहित आदर्श चरित्र और कहीं नहीं है, न किसी देश के इतिहास में और न किसी काल में।" *- कृष्णचरित*

प्रसिद्ध लेखक चमूपति लिखते हैं "हमारा अर्घ्य उस श्रीकृष्ण को है, जिसने युधिष्ठिर के अश्वमेघ में अर्घ्य स्वीकार नहीं किया। साम्राज्य की स्थापना फिर से कर दी, परन्तु उससे निर्लेप, निस्संग रहा है। यही वस्तुत: योगेश्वर श्रीकृष्ण का योग है।" *- योगेश्वर कृष्ण पृष्ठ 352*

स्वतन्त्रता सेनानी और आर्यसमाज के महानायक लाला लाजपत राय ने अपने श्रीकृष्ण चरित में श्रीकृष्ण के सम्बंध में एक बड़ी विचारणीय बात लिखी है- "संसार में महापुरुषों पर उनके विरोधियों ने अत्याचार किये, परन्तु श्रीकृष्ण एक ऐसे महापुरुष हैं जिन पर उनके भक्तों ने ही बडे लांछन लगाये हैं। श्रीकृष्ण जी अपने भक्तों के अत्याचार के शिकार हुए हैं व लगातार हो रहे हैं।"

आज श्रीकृष्ण के नाम पर न जाने कितने अवतारों और सम्प्रदायों का जाल बिछा है, जिसमें श्रीकृष्ण को भागवत के आधार पर "चोरजार-शिखामणि" और न जाने कितने ही 'विभूषणों' से अलंकृत करके उनके पावन-चरित्र को दूषित करने का प्रयत्न किया हैं।

कहाँ महाभारत में शिशुपाल जैसा उनका प्रबल विरोधी, परन्तु वह भी उनके चरित्र के सम्बंध में एक भी दोष नहीं लगा सका और कहाँ आज के कृष्ण भक्त जिन्होंने कोई भी ऐसा दोष नहीं छोड़ा जिसे श्रीकृष्ण के ऊपर न मढ़ा हो। क्या ऐसे दोषपूर्ण कृष्ण किसी भी जाति, समाज या राष्ट्र के आदर्श हो सकते हैं?

योगीराज श्रीकृष्ण के आदर्श सन्देश को समझें, उनकी शिक्षाओं को धारण करें। निराशा-उदाशी-चिंता, भय-भ्रम को दूर भगाएं, आशा-उत्साह-उमंग-उल्लास को धारण करें, स्व कर्त्तव्य-अकर्तव्य का मर्म समझें और जीवन सफल बनाएं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सभी को योगीराज श्रीकृष्ण के जन्मदिन की बहुत- बहुत बधाई और शुभकामनाएं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह